भौगौलिक स्थिति

श्रीगंगानगर जिला जलोढ़ व रेतीले धोरों से आच्छादित एक मैदानी भाग है इसके पष्चिम की तरफ ढालुवां भूमि है सामान्यतः बालू के टीलों की उंचाई 4 से 5 मीटर है तथा दक्षिण–पष्चिम भाग में तीव्र रूप से विकसित है और कहीं–कहीं 10 से 15 मीटर उॅचें है।

जिले में कोई महत्वपूर्ण पहाडी नही है, तथापि सूखी सरस्वती और दृषद्वती नदियों के किनारों के भाग–भू तल से उठे हुए है। जिले का उत्तरी हिस्सा, दक्षिणी और दक्षिण–पूर्वी हिस्सों की तुलना में जंगलों से अच्छी तरह आच्छादित है। जिले की समुद्र तल से औसत उंचाई 168 से 227 मीटर के मध्य है तथा जिला अक्षांष 28.4^0 से 30.6^0 तथा देषान्तर 72.2^0 से 75.3^0 में है।

नदी, झील और कुण्ड़– जिले में कोई बारहमासी नदी विद्यमान है, परन्तु पूर्व में यहां घग्घर नदी बहती थी जो तलवाडा (हनुमानगढ़ जिला) नामक स्थान पर प्रवेष करते हुए बहावलपुर (पाकिस्तान) नामक स्थान से बहती हुई बिंजौर गांव के पास सतलुज नदी में मिल जाती थी। जिले में बहती हुई घग्घर नदी की लम्बाई लगभग177.02 किमी अर्थात् 110 मील है और इसी उत्पत्ति स्थल से भारत–पाक सीमा तक इसकी लम्बाई 514.99 किमी अर्थात 320 मील है। वर्षा जल में परिवर्तन के कारण घग्घर नदी का मार्ग सूख गया है तथा जिससे इसका नाम नाली पड गया है। इस नदी की मिट्टी बहुत उपजाउ करने और जल मीठा है। इसमें कभी–कभी मानसून के दौरान बाढ आ जाती है। बाढ के पानी के सदुपयोग करने तथा पानी को बेकार हो जाने से रोकने हेतु जिले में विभिन्न जल मार्गों का निर्माण किया गया है।

जिला में कोई प्राकृतिक झील नही है। डाबला (रायसिंहनगर) में बुढ्डाजोहड नामक एक कुंण्ड है जिसमें गंगनहर की टेल का जल संग्रहित होता है। परन्तु यहां जल की सीमित मात्रा के कारण इसका उपयोग सिंचाई में नही होता है।